कक्षा-10+2 (हिंदी)

तैयारकर्ता व प्रस्तुतकर्ता
डॉ.सुनील बहल

अलंकार

अलंकार शब्द 'अलम' और 'कार' दो शब्दों के मेल से बना है। 'अलम'का अर्थ है- भूषण और 'कार' का अर्थ है- करने वाला। अत: 'अलंकार शब्द का अर्थ हुआ जो भूषित या अलंकृत करे वह 'अलंकार' है।

मनोविज्ञान की दृष्टि से मानव सौन्दर्य-प्रेमी है। सौन्दर्य के प्रति उसका आकर्षण और प्रवृत्ति सहज एवं उत्कट है। वह अपने रूप, वेश-भूषा और आस-पास के वातावरण को सुंदर रूप में देखना चाहता है। सौन्दर्य प्रियता की प्रवृत्ति साहित्य में भी दृष्टिगोचर होती है। जिस प्रकार स्त्रियाँ अपने साज-श्रृंगार के लिए आभूषणों का प्रयोग करती हैं अतएव आभूषण अलंकार कहलाते हैं, उसी प्रकार कविता भी अपने श्रृंगार के लिए जिन साधनों का प्रयोग करती हैं, वे अलंकार कहे जाते हैं। संस्कृत आचार्य दण्डी के अनुसार-"काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते" अर्थात् काव्य के शोभा कारक सभी प्रकार के धर्म अलंकार हैं आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार-"भावों का उत्कर्ष दिखाने और वस्तुओं के रूप, गुण और क्रिया का अधिक तीव्र कराने में कभी-कभी सहायक होने वाली युक्ति को अलंकार कहते हैं। अलंकार युक्त कविता की सुंदरता उसी प्रकार बढ़ जाती है जिस प्रकार किसी रमणी की कोमल देह की शोभा आभूषणों को धारण करने से दुगुनी हो जाती है। डॉ० श्यामसुंदरदास के अनुसार-"जिस प्रकार आभूषण शरीर की शोभा को बढ़ाते हैं उसी प्रकार अलंकार भी भाषा की सौन्दर्य वृद्धि करते, उसके उत्कर्ष को बढ़ाते, रस, भाव और आनन्द को उत्तेजित करते हैं।

काव्य में अलंकारों की क्या स्थिति हो, इस विषय में भी विद्वानों के विभिन्न मत रहे हैं। कुछ विद्वानों ने अलंकारों को इतना महत्त्व दिया कि उन्हें काव्य की आत्मा ही स्वीकार कर लिया तो कुछ विद्वान अलंकारों की आवश्यकता ही स्वीकार नहीं करते। उनकी नज़र में, अलंकार भावों की अभिव्यक्ति के साधक नहीं अपितु बाधक हैं। किन्तु तात्विक दृष्टि से देखें तो ये दोनों ही बातें निराधार हैं। अलंकारों को न तो काव्य की आत्मा माना जा सकता है और न ही इनकी पूर्णत: उपेक्षा ही की जा सकती है। जिस प्रकार आभूषण नारी की सुंदरता को बढ़ाते हैं उसी प्रकार काव्य के अलंकार भी कविता की शोभा बढ़ाते हैं। परन्तु जैसे बिना आभूषणों के नारी तो नारी ही है, इसी प्रकार अलंकारों के बिना भी कविता की रचना हो सकती है; हाँ, संभवत: उसकी सुंदरता कम हो सकती है।

काव्य में अलंकारों का प्रयोग सीमित व स्वाभाविक होना चाहिए क्योंकि अलंकार काव्य के लिए हैं, काव्य अलंकारों के लिए नहीं हैं।

अलंकारों के भेद – अलंकारों के मुख्य रूप से दो भेद हैं–

(1) शब्दालंकार (2) अर्थालंकार

(1) शब्दालंकार – काव्य में जहाँ शब्दों के माध्यम से चमत्कार उत्पन्न होता है, वहाँ शब्दालंकार होता है। जैसे– संसार की समरस्थली में धीरता धारण करो।

उपर्युक्त पंक्ति में 'संसार' तथा 'समरस्थली' में 'स' वर्ण तथा 'धीरता' और 'धारण' शब्दों में 'ध' वर्ण की आवृत्ति के कारण चमत्कार उत्पन्न हो रहा है किन्तु यदि इन शब्दों के स्थान पर उनके पर्यायवाची शब्द प्रयुक्त कर दिए जाएं तो यह चमत्कार नष्ट हो जाएगा। जैसे–

विश्व की समरस्थली में हौंसला धारण करो।

(2) अर्थालंकार – जो अलंकार अर्थ–सौन्दर्य को बढाते हैं, वे अर्थालंकार कहलाते हैं। ये अलंकार शब्द विशेष पर निर्भर न होकर अर्थ पर आश्रित रहते हैं। जैसे– मोम –सा तन घुल चुका अब। यहाँ तन की मोम से तथा मन की दीप से समानता दर्शाते हुए चमत्कार उत्पन्न किया गया है अर्थात् अर्थ के कारण काव्य को चमत्कृत किया गया है।

मुख्य शब्दालंकार – अनुप्रास, यमक, पुनरुक्ति प्रकाश।

मुख्य अर्थालंकार – उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, व्यतिरेक, अन्योक्ति, अर्थान्तरन्यास, विशेषोक्ति, विरोधाभास।

अब उपर्युक्त मुख्य शब्दालंकारों तथा अर्थालंकारों का वर्णन किया जा रहा है–

1.*अनुप्रास* अलंकार

परिभाषा : जिस रचना में वर्णों की बार–बार आवृत्ति के कारण चमत्कार उत्पन्न हो, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। जैसे–

उदाहरण :– **मेरा मन्दिर, मेरी मस्जिद**
काबा–काशी यह मेरी।

स्पष्टीकरण : उपर्युक्त उदाहरण की पहली पंक्ति में 'मेरा' 'मन्दिर', 'मेरी' तथा 'मस्जिद' शब्दों में 'म' व्यंजन और दूसरी पंक्ति में 'काबा','काशी' में 'क' व्यंजन की आवृत्ति हुई है । अतः यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

2. यमक अलंकार

परिभाषा : जिस रचना में किसी शब्द या शब्दांश का एक से अधिक बार भिन्न-भिन्न अर्थों में प्रयोग हुआ हो, वहाँ यमक अलंकार होता है। जैसे-

उदाहरण :- माला फेरत युग गया , फिरा न मन का फेर ।
कर का मनका डारि के , मन का मनका फेर।।

स्पष्टीकरण : प्रस्तुत उदाहरण की पहली पंक्ति में 'मन का' शब्द का अर्थ है- 'हृदय का' और दूसरी पंक्ति में 'मनका' शब्द का अर्थ है - 'मोती' । अत: यहाँ यमक अलंकार है।

3. रूपक अलंकार

परिभाषा :- जहाँ उपमान का उपमेय में आरोप करके दोनों में अभेद दिखाया जाये, वहाँ रूपक अलंकार होता है।

उदाहरण :- पायौ जी मैंने राम-रतन धन पायो ।

स्पष्टीकरण :- यहाँ राम(उपमेय) में रतन धन (उपमान) का आरोप होने के कारण रूपक अलंकार है।

4.उपमा अलंकार

परिभाषा :- जहाँ एक वस्तु की तुलना किसी दूसरी प्रसिद्ध वस्तु के साथ की जाये,वहाँ उपमा अलंकार होता है।

उदाहरण :-चाँद जैसा सुंदर मुख ।

स्पष्टीकरण :- यहाँ मुख (उपमेय) की तुलना चाँद (उपमान) प्रसिद्ध वस्तु के साथ की गयी है, अत: यहाँ उपमा अलंकार है।

5.श्लेष अलंकार

परिभाषा : जहाँ एक शब्द एक बार प्रयुक्त होने पर दो या दो से अधिक अर्थ बताये,वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

उदाहरण :- रहिमन पानी राखिए, बिनु पानी सब सून ।
पानी गए न ऊबरे, मोती मानुस चून ।।

स्पष्टीकरण:- यहाँ अंतिम पंक्ति में 'पानी' शब्द के तीन अर्थ हैं- 'पानी' शब्द का 'मोती' के लिए अर्थ है- **चमक** ।'पानी' शब्द का 'मनुष्य' के लिए अर्थ है-**आत्मसम्मान** । 'पानी' शब्द का 'चूने' के लिए अर्थ है-**जल** ।

यहाँ अंतिम पंक्ति में 'पानी' शब्द तीन विभिन्न अर्थ दे रहा है, अत: यहाँ श्लेष अलंकार है।

इन अलंकारों को विस्तारपूर्वक समझने के लिए पढ़िए -

अनुप्रास

जिस रचना में वर्णों की बार-बार आवृत्ति के कारण चमत्कार उत्पन्न हो, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। जैसे-

मेरा मन्दिर, मेरी मस्जिद
काबा-काशी यह मेरी।

स्पष्टीकरण : उपर्युक्त उदाहरण की पहली पंक्ति में 'मेरा' 'मन्दिर', 'मेरी' तथा 'मस्जिद' शब्दों में 'म' व्यंजन और दूसरी पंक्ति में 'काबा','काशी' में 'क' व्यंजन की आवृत्ति हुई है। अत: यहाँ अनुप्रास अलंकार है। **अन्य उदाहरण**

(i) बार बार बन्दौ तिहिं पाई	'ब' वर्ण की आवृत्ति
(ii) निरमल नीर बहत जमना में	'न' वर्ण की आवृत्ति
(iii) सबद सुनत मुरली को	'स' वर्ण की आवृत्ति
(iv) करि किरपा अपणायौ	'क' वर्ण की आवृत्ति
(v) का जानूँ कुछ पुण्य प्रगटे	'प' वर्ण की आवृत्ति

यमक

जिस रचना में किसी शब्द या शब्दांश का एक से अधिक बार भिन्न-भिन्न अर्थों में प्रयोग हुआ हो, वहाँ यमक अलंकार होता है। जैसे-

कहत सबै बेंदी दिए अंक दस गुनौ होत।
तिय लिलार बेंदी दिए अगनित बढतु उदोत।

स्पष्टीकरण : प्रस्तुत उदाहरण में 'बेंदी' शब्द दो बार प्रयोग में आया है और इसके दो भिन्न-भिन्न अर्थ हैं। प्रथम पंक्ति में बेंदी का अर्थ बिन्दु (शून्य) है और द्वितीय पंक्ति में बेंदी का अर्थ 'नायिका के माथे पर लगी बिन्दी' है, अतः यमक अलंकार है।

इसी तरह 'काली घटा का घमण्ड घटा' में भी यमक अलंकार प्रयुक्त है। 'काली' शब्द के तुरन्त बाद प्रयुक्त हुए 'घटा' शब्द का अर्थ है- 'पावस ऋतु में आकाश में उमड़ने वाली मेघ माला' तथा 'घमण्ड' शब्द के बाद अंत में प्रयुक्त हुए 'घटा' शब्द का अर्थ है 'कम'। यहाँ 'घटा' शब्द के भिन्न-भिन्न अर्थ हैं, अतः यमक अलंकार है।

उपमा

जहाँ एक वस्तु की तुलना किसी दूसरी प्रसिद्ध वस्तु के साथ की जाए, वहाँ उपमा अलंकार होता है। इसके चार अंग है :-

(i) उपमेय- जिसकी उपमा दी जाए। **(ii) उपमान-** जिससे उपमा दी जाए।
(iii) साधारण धम- उपमेय या उपमान में जो गुण, दोष समान होता है।
(iv) वाचक शब्द- जिन शब्दों के द्वारा समता प्रकट की जाए।

जहाँ ये, चारों अंग विद्यमान हों, वहाँ 'पूर्णोपमा' अलंकार होता है। जैसे- **चाँद जैसा सुंदर मुख।**

स्पष्टीकरण : उक्त उदाहरण में 'मुख' उपमेय, 'चाँद' उपमान, 'सुंदर' साधारण धर्म तथा 'जैसा' वाचक शब्द है। अतः यहाँ पूर्णोपमा अलंकार है।

विशेष- 'उपमा' अलंकार के उपर्युक्त चारों अंगों में से जब कोई अंग नहीं दिखाया जाता तो उसे 'लुप्तोपमा' अलंकार कहते हैं। जो अंग नहीं दिखाया जाता, उसे स्वयं ढूँढ लिया जाता है। जैसे-'मुख चाँद के समान है'

इस उदाहरण में साधारण धर्म 'सुंदर' लुप्त है; जिसका अनुमान से अर्थ निकाल लिया जाता है। अतः यहाँ लुप्तोपमा अलंकार है।

विशेष- उपमा अलंकार में सा, सी, से, सम, जैसी, जैसा, ज्यों, के समान तथा सरिस आदि वाचक शब्द प्रयोग में आते हैं।

अन्य उदाहरण

मान से महीप औ दिलीप जैसे छत्रधारी,
बडो अभिमान भुज दंड को करत हैं।
दारा से दिलीसर, दर्जोधन से मानधारी,
भोग-भोग भूम अन्त भूम मै मिलत हैं।

उपर्युक्त उदाहरण में '**मान से महीप**', '**दिलीप जैसे छत्रधारी**', '**दारा से दिलीसर**' तथा '**दर्जोधन से मानधारी**' में उपमा अलंकार है।

रूपक

जहाँ रूप, गुण, आकृति-प्रकृति, वेशभूषा आदि के कारण उपमान का उपमेय में आरोप करके दोनों में अभेद दिखाया जाए, वहाँ रूपक अलंकार होता है। जैसे- **चरण-कमल बन्दौ हरिराई।**

स्पष्टीकरण : उक्त पद में सादृश्य के कारण 'चरण'(उपमेय) में 'कमल' (उपमान) का आरोप किया गया है। अत: यहाँ रूपक अलंकार है।

इसी तरह 'पायौ जी मैंने राम-रतन धन पायो' में भी 'राम'(उपमेय) में 'रतन धन' (उपमान) का आरोप होने से रूपक अलंकार है।

अन्य उदाहरण-

(i) काल-व्याल सूँ बाँची।

(ii) सत की नाव, खेवटिया सतगुरु, भवसागर तरि आयौ।

श्लेष अलंकार

जहाँ एक शब्द एक ही बार प्रयुक्त होने पर दो या दो से अधिक अर्थों का बोध कराता है, वहाँ श्लेष अलंकार होता है। **उदाहरण**

रहिमन पानी राखिए, बिनु पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे, मोती, मानुष चून॥

स्पष्टीकरण

उपर्युक्त उदाहरण की अंतिम पंक्ति में कहा गया है कि मोती, मनुष्य और चूना -- इन तीनों का पानी के बिना उद्धार नहीं हो सकता।

यहाँ **पानी** शब्द का 'मोती' के लिए अर्थ है - **चमक।**

मनुष्य के लिए पानी का अर्थ है - **आत्म सम्मान**

चूने के लिए पानी का अर्थ है - **जल ।**

अत: यहाँ दूसरी पंक्ति में एक बार प्रयुक्त 'पानी' शब्द तीन विभिन्न अर्थ दे रहा है। अत: यहाँ श्लेष अलंकार है।

==========

तैयारकर्ता व प्रस्तुतकर्ता
डॉ.सुनील बहल
एम.ए.(संस्कृत ,हिंदी), एम.एड.,पीएच.डी (हिंदी)
स्टेट रिसोर्स पर्सन
(हिंदी और पंजाबी)

==========